

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ हनुमतकवचलिख्यते
 ईश्वरस्य श्रीपंचमुखीदेवता अनुष्टुप छंदः ॥ ई
 नुमान इति वायुपुत्र इति सक्तिः ॥ ई अंजनीसुत
 इति कीलकं ॥ रामचंद्रहनुमतप्रसादसिध्दार्थ
 यपेविनिर्गोः ॥ अथ न्यासः ॥ ई अंजनीसुताय
 अशुभाभ्यां नमः ॥ ई वायुपुत्राय ॥ ई इन्द्रमर्त्ये
 तर्जनीभ्यां नमः ॥ ई वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां न
 मः ॥ ई अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नमः ॥
 ई रामदुताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ई पंचमुखी

[illegible]

लं मतेक नतलक यप्रियाभ्या नमः ॥ ॐ अंजनीसु
 ताये हृदय नमः ॥ ॐ उद्र भर्जेति रस्य स्वाहा ॥ ॐ वायु पु
 त्राय सिवाय वौषट् ॥ ॐ अग्नि ज्ञात्रीय कवच चाय
 हं ॥ ॐ राम दुताय नेत्र नाय वौरे ॥ ॐ पंच मुदी हनु
 मताय ॥ अंजनीया वायु पुत्राय मह वलाय प्रचंड पातं गुरु
 य समाय लोलात वसकल व्रह्मांड विस्मरुपाय ॥ समुद्र नि
 तनाय ॥ विंगल नय नाय ॥ अमित विष्णु नाय ॥ सुर्ज विं
 दल मेवाय ॥ दुष्ट निवार नाय ॥ अंगद लक्ष्मि मजक पि
 मै न्या प्राण प्रादाय ॥ दशकंठ विध्वंश नाय ॥ रामेष्टाय
 महा पादुराय सदाय ॥ सीता सहित नाग चरुदाय ॥ दह

॥पं॥

॥३॥

३

बुद्धिः॥ तदुभयाभिमानात्मा प्राज्ञः॥ एतन्नयं
 मकारः॥ अकार उकारः उकारो मकारः॥ मया
 रः॥ ॐ कारः॥ ॐ कारो अहमेव॥ अहमात्मा
 साक्षी केवलश्चिन्मात्रस्वरूपो हं किंतु नि
 त्यशुद्धबुद्धस्तत्त्वभावः परमानंद इत्यं
 लाहमस्मीत्येवं ब्रह्मेत्येव स्थानं समाधिः॥ ३॥
 तत्त्वमसीन्नलाहमस्मि॥ प्रज्ञानब्रह्म अ

CC-0. Lax Bharathi Grantha University. Digitized by eGangotri Sharada Peetham

॥ यं ॥

॥ ४ ॥

4

म षो षो ह म जो ह म म तो स्प्य हं ॥ नित्यो हं निर्वि
क ल्पो हं निराकारो ह म व्ययः ॥ स च्छिदानंदस्त्वो
हं परिपूर्णोस्मि सर्वदा ॥ अकर्ता ह म भोक्ता
ह म संगः परमेश्वरः ॥ सदा म तं निधानेन
चैवृते सर्वसिं द्रियं ॥ ब्रह्मैवा हं न संसारा मुक्ता
ह नि ति भा व ये त ॥ अ शा क्रे व न भा व यितुं वा
क्य मे ता सा दा भ्य से त ॥ ध्यान योगेन मा सा

॥ ४ ॥

यमात्मात्रहेत्यादिश्रुतिः॥ इति पञ्चीकरणं
भवति॥ चिंतयेत् प्रणवात्मानमात्मज्योतिः
सनातनं॥ चैतन्यमात्रममृतं सोहमास्मि
ति नित्यं॥ कार्योपाधिरयं जीवः कार
णोपाधिरीश्वरः॥ कार्यकारणतो हित्वा
पूर्णबोधो विप्रिष्यते॥ अच्युतो ह मनंतो
ह नो विदो ह मंहं हि॥ आनंदो ह मप्रो मोह

पं०

॥ ५ ॥

5

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Shrivastava, eGangotri

मायासमावेशाद्वा जन्मव्याहृतात्मकं २ त
स्मादाकाशमुत्पन्नं शब्दस्पर्शमात्ररूपकं
स्पर्शात्मकस्ततो वायुस्तेजोरूपात्मकं त
तः ॥ ३ ॥ आचो रसात्मिकास्तस्मात्ताभ्यो गं
धात्मिका मही ॥ शब्देकगुणमाकाशं शब्द
रूपशब्दगुणो मरुतः ॥ ४ ॥ शब्दस्पर्शरूपशब्द
स्पर्शगुणतैजस्यति ॥ पादस्पर्शरूपरसगु

॥ ५ ॥

च ब्रह्म हस्तां व्यपोहति ॥ संवत्सरं ह्यताभ्यां त्ति
ध्म एकं मवाप्नुयात् ॥ इति श्रीमत्संरमहंस
परिब्राजकाचार्यश्रीमत्संस्कृतचार्यविरचि
तं वेदान्तसारयंत्रीकरणं समाप्तं ॥ उक्तरः
सर्ववेदानां सारस्तत्त्वप्रकाशकः ॥ तेन चि
त्तसमाधानं मुमुक्षुणां प्रकाशयते ॥ श्री
सीदेकं परं ब्रह्म नित्यमुक्तमविक्रियं ॥ तत्त्व

6

॥

सख

सर्व
शिव

शिव

दा य द स कं वी रं स ना य रा म छ य क लो स र्वा
 य वि ता स जी त रा म व र प स दा य छ य यो जा ग म
 वि नो यो गः अ न्ये दि अं धः कं र वं ग द्य तं वं व
 जं हं जं टं डं डं रा त अं दं थं नं पं कं वं नं मं अं रं
 मं वं स र व सं डं स र व हा इ ति दिं ग वं थं नं इ रि म
 कं ट म कं ट य वं वं वं वं वं वं वं कं ट र व हा नं इ रि म
 र म कं टा य वं वं वं वं वं वं वं वं कं ट र व हा नं इ रि म
 म कं टा य वं वं वं वं वं वं वं वं कं ट र व हा नं इ रि म
 म कं टा य वं वं वं वं वं वं वं वं कं ट र व हा नं इ रि म
 म कं टा य वं वं वं वं वं वं वं वं कं ट र व हा नं इ रि म
 म कं टा य वं वं वं वं वं वं वं वं कं ट र व हा नं इ रि म

तथा सरस्वती नैवायुपुत्राय सिरवे
दंभी अंगी गमय केवलाय नै समदु
ये नै नै नै यै यै रवटः नै पंच मुखि नै नै
ते सापकैः अवाक शंग न्यासः अथ च्या
न नै रावे द्रुताय अङ्ग नि सुताय वायु पु
नीय मद्राव वाय सित कुत दै रव नि वा र
य ल के दै नै नै कार राय मद्राव ले प्रवे दय
फे ए गृहा सरवाय को ला दै सक ले व
ह्ना इ विस्तरू पाय यै यै यै यै यै यै
यै यै यै यै यै यै यै यै यै यै यै यै
यै यै यै यै यै यै यै यै यै यै यै यै

